11

भू सूक्त

प्रिय शिक्षार्थी, पूर्व पाठ में आपने सूर्य सूक्त का अध्ययन किया हैं जिसमें आपने सूर्य के कल्याणकारी रूप तथा संपूर्ण सृष्टि के आत्मा के रूप में उनके स्वरूप के विषय में जाना। इस पाठ में आप भू सूक्त का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- भू सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- भू सूक्त का अर्थज्ञान कर पाने में ।

11.1 भू सूक्त

ॐ ॥ भूमिर्भूम्नाद्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा ।

उपस्थे ते देव्यदिते ऽग्निमन्नाद-मन्नाद्यायादधे॥

bhūmir bhū̱mnā dyaur vari̱ṇā'ntarikṣaṁ mahi̱tvā |

u̱pasthe te devyadite̱'gnim annā̱dam annādyā̱yā dadhe ||

हे देवी अदिति! आप ही गहराई रूप में भूमि हैं, चौडाई के रूप में आकाश हैं, महानता (विशालता) के रूप में वातावरण हैं। लोकों के अन्नादि की उपलब्धि हेतु मैं आप की गोद में अग्नि अर्पण करता हूँ।

आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमी दसनन्मातरं पुनः ।

पितरं च प्रयन्त्सुवः॥

āyaṅgauḥ pṛśnir akramī̱ dasanan mā̱tara̱ṁ punaḥ |

pi̱tarañ ca pra̱yant-suvaḥ ||

स्वर्ग मे अपने पिता को आगे बढ़ाने के लिए एक चित्तकबरा बैल पूर्व की दिशा में माँ के सामने आकर बैठ गया।

त्रिꣳशद्धाम विराजति वाक्पतङ्गाय शिश्रिये ।

प्रत्यस्य वह द्युभिः॥

भू सूक्त

कक्षा – 7

टिप्पणी

tri̱gu̱ṁ śaddhāma̱ virā̍jati̱ vāk pa̍ta̱ṅgāya̍ śiśriye |

pratya̍sya vaha̱ dyabhiḥ ||

तीस स्थानों पर वह शासन करता हैं। उडने के लिए पंखो की भांति वाक् पर निर्भर है। इसे कृपा करके कुछ समय के लिए सहन करें।

अ॒स्य प्रा॒णाद॑पान॒त्य॑न्तश्च॑रति रोच॒ना ।

व्य॑ख्यन् महि॒षः सुव॑ः॥

a̱sya prā̱ṇād a̍pāna̱tya̍nta̍ścarati roca̱nā |

vya̍khyan mahi̱ṣas suva̍ḥ ||

उसके सभारित की प्रेरणा से, वह जगत् के अन्दर धूमती रहती है, तब बैल को समझ में आता हैं।

यत्त्वा᳚ क्रु॒द्धः प॑रो॒वप॑म॒न्युना॒ यदव॑र्त्या ।

सु॒कल्प॑मग्ने॒ तत्तव॒ पुन॒स्त्वोद्दी॑पयामसि॥

yatvā᳚ kru̱ddhāḥ pa̍ro̱ vapa̍ ma̱nyunā̱ yad a̍vartyā |

su̱kalpa̍m agne̱ tat tava̱ puna̱s-tvoddī̍payām asi ||

यदि गुस्सें या दुर्भावनावश गलत व्यवहार से मैंने तुम्हे छिन्न–भिन्न किया है तो इसे आप ही ठीक कर सकते है। हे अग्नि! हम आपको पुनः नमस्कार करते हैं।

यत्तें म॒न्युपंरोप्तस्य पृथि॒वी-मनुंदध्व॒से ।

आ॒दि॒त्या विश्वे॒ तद्दे॒वा वसंवश्च स॒माभंरन् ॥

yatte̍ ma̱nyu pa̍roptasya pṛthi̱vīm anu̍ dadhva̱se |

ā̱di̱tyā viśve̱ tad-de̱vā vasa̍vaśca sa̱mābha̍ran ||

जो भी आपने, गुस्से या दुर्भावनावश छिन्न–भिन्न कर दिया था, वह पृथ्वी पर फैल गया था। उसे, आदित्य, सभी देवताओं और वसु ने इकट्ठा किया।

मे॒दिनीं दे॒वी व॒सुन्धंरा स्या॒द्वसुंदा दे॒वी वा॒सवीं ।

ब्र॒ह्म॒व॒र्च॒सः पिंतृ॒णाः श्रोत्रं॒ चक्षु॒र्मनंः ॥

me̱dinī̍ de̱vī va̱sundha̍rā syā̱d vasu̍dhā de̱vī vā̱savī̍ |

bra̱hma̱ va̱rca̱saḥ pi̍tṛ̱ṇāgass śrotra̱ṁ cakṣu̱r mana̍ḥ ||

उसे कई नामों से संबोधित किया जाता है जैसे–मेदिनी, देवी, वसुन्धरा, वसुधा, वासवी। वह पित्रों (मुनियों) की आँख, कान और मन है तथा वह निश्चित रूप से ब्रह्मा के साथ हैं।

दे॒वी हिरंण्यगर्भिणी दे॒वी प्र॒सूवंरी (प्र॒सोदंरी) ।

रसंने (सदंने) स॒त्यायंने सीद ॥

de̱vī hira̍ṇya-garbhiṇī de̱vī pra̱sūvarī̍ |

rasa̍ne sa̱tyāya̍ne sīda ||

भू सूक्त

सर्वोत्तम कर्त्ता और निर्वाहक के रूप में संपूर्ण पृथ्वी की देवी (माँ स्वरूप) संपूर्ण विश्व रूपी स्वर्ण अण्डे का गर्भधारण करती हैं।

समुद्रवंती सावित्री हनो देवी मह्यङ्गीं।

महीधरंणी महोव्यथिंष्टा (महोध्यतिंष्ठा)

श्शृङ्गे शृ्ङ्गे यज्ञे यंज्ञे विभीषणीं ॥

samudravatī sāvitrī ha no devī mahyaṅgī |

maho-dharaṇī maho vyathiṣṭhāḥ |

śṛṅge śṛṅge yajñe yajñe vibhīṣaṇī |

आप संपूर्ण पृथ्वी की महान माता है, प्रत्येक रचना में शीर्ष पर दृढ, निश्चय और किसी भी प्रकार के बलिदान हेतु भययुक्त रूप से स्थापित हैं। आपके उपासक किसी भी तरह से भय और डर से दूर हैं।

इन्द्रंपत्नी व्यापिनीं सुरसंरिदिह ।

वायुमतीं जलशयंनी श्रियं,न्धा (स्वयंधा) राजां सत्यन्तो (धो) परिंमेदिनी ॥

श्वोपरिंधत्त परिंगाय। सो परिधत्तंगाय)

indra patnī vyāpinī surasarid iha ||

vāyumatī jalaśayanī śriyaṁ dhā rājā satyandho pari medinī |

śvoparidhataṁ gāya ||

वह (आप) इन्द्र की पत्नी हैं, सर्वत्र व्याप्त हैं, पृथ्वी पर दैवीय नदी रूप हैं, जो भी जीवित है उनमें प्राण रूप सांसे है। आप धन की देवी, रूप में भाग्य की देवी स्वरूपा हैं। आप पृथ्वी के शीर्ष पर तथा सर्वत्र व्याप्त हैं।

वि॒ष्णु॒प॒त्नीं म॑हीं दे॒वीं॒ मा॒ध॒वीं मा॑धव॒प्रियां ।

लक्ष्मीं॑ प्रि॒यस॑खीं दे॒वीं॒ न॒मा॒म्यच्॑युत व॒ल्लभां ॥

vi̱ṣṇu̱-pa̱tnīṁ ma̍hīṁ devī̱ṁ mā̱dha̱vīṁ mā̍dhava̱-priyām |

lakṣmī̎ṁ pri̱ya sa̍khīṁ de̱vī̱ṁ na̱mā̱my-acyu̍ta va̱llabhām ||

ॐ ध॒नु॒र्ध॒रायै॑ वि॒द्महे॑ सर्वसि॒द्ध्यै च॑ धीमहि ।

तन्नो॑ धरा प्रचो॒दया॑त् ॥

oṁ dha̱nur-dha̱rāyai vi̱dmahe̍ | sarva si̱ddhyai ca̍ dhīmahi |

tanno̍ dharā praco̱dayā̎t |

हम उसे धनुष की प्रत्यंचना के रूप में जानकर उसकी पूजा करते हैं। हम इस उद्‌देश्य के साथ उनका ध्यान करते हैं कि वह हमारी सफलता (सिद्धि) का हमें आर्शिवाद दे। हम उस धरा से प्रेरित हों और हम उन्हें नमस्कार करतें है।

पाठगत प्रश्न– 11.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. वि सी॑म॒तः .... वे॒न आ॑वः
2. पि॒ता वि॒राजा॑मृष॒भो .... ।
3. .... विश्वं॑मि॒दं जग॑त् ।
4. चत॑स्र .... प्रच॑रन्त्व॒ग्रय॑ः ।
5. घृ॒तं॑ पिन्वं॑न्न॒जरं॑ .... ।

आपने क्या सीखा?

- भू सूक्त का उच्चारण करना।
- भू सूक्त का अर्थज्ञान।

पाठांत प्रश्न

1. भू सूक्त का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरमाला

11.1

(1)

1. सु॒रुचौ॑
2. र॑यी॒णाम्
3. ब्रह्म॒
4. आशा॒ः
5. सु॒वीर᳚म्